Paper VIII 16

प्र. A

(प्रयाग)

समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भलेख

इस अभिलेख का प्रकाशन 1834 में हुआ था। यह बलुआ पत्थर के एकाश्म 35 फुट ऊँचे स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। और आजकल यह अभिलेख इलाहाबाद किले में रखा गया है। इस स्तम्भ अभिलेख में अशोक द्वारा जारी एक आदेश का भी वर्णन है। यह लेख राजा के जीवन के अन्तिम चरण में, परन्तु अश्वमेध यज्ञ करने से पूर्व यह लेख उत्कीर्ण हुआ था।

यह समुद्रगुप्त, सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से पौत्र घटोत्कच एवं प्रपौत्र गुप्त का वृतान्त इस अभिलेख में अंकित है। वह विद्याओं एवं ललित के कलाओं का प्रेमी तथा विद्वानों का संरक्षक भी था। वह अपने पिता द्वारा पाटलिपुत्र की राजगद्दी का उत्तराधिकारी चुना गया था। उसने आर्यावर्त के रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नन्दी एवं बालवर्मन सहित बहुत से राजाओं को परास्त किया। यह अभिलेख समुद्रगुप्त की विस्तृत विजयों एवं उसके गुणों की प्रशंसा करता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय वृतों में विपुल ब्यौरों की प्रचुरता लिए यह एकमात्र अभिलेख है। यह भारत के भौगोलिक विभागों का स्पष्ट मानचित्र उपस्थित करता है। एवं समुद्रगुप्त की विजयों की जानकारी देता है। इस अभिलेख का पता लगने तक समुद्रगुप्त अनजाना था। वह महान योद्धा ही नहीं बल्कि महानकवि एवं कवियों का संरक्षक भी था।

समुद्रगुप्त सबसे पहले अपने निकटतम

राजाओं पर चढ़ाई कर आर्यावर्त के राजाओं को पूर्णतः उन्मूलन कर लिया और दक्षिण भारत के राजाओं को जीतने का अभियान देखा — अभियानों का भौगोलिक एवं सफलता स्तर के अनुसार वि पाँच वर्गों में वर्गीकरण करता है :-

1. आर्यावर्त के राजाओं के विरुद्ध अभियान में नव राज्यों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिए गये।

2. दक्षिणा पथ के साथ राजाओं को हराया। परन्तु फिर उसे बहाल कर दिया।

3. जंगल के कबीलों के मुखियों, जिन्हे उसने अधीन कर लिया था, के नाम का वर्णन नहीं है।

4. सीमान्त पाँच राज्यों के शासकों एवं नौ गणराज्यों को अपना सामान्त बना लिया था।

5. चार विदेशी शासकों से, जो गणतंत्र राज्य कहते थे, दौत्य सम्बन्ध कायम किए।

ये लोग सम्राट के विभिन्न प्रकार की सेवायें प्रस्तुत करते थे जो निम्न हैं:-

1. अपने स्वयं के आदमी सम्राट की व्यक्तिगत सेवा के प्रस्तुत करना।

2. कुमारियाँ प्रस्तुत करना।

3. उपहार देना

4. राजकीय गरुड़ मुद्रा की राजाज्ञा-पत्र के अनुसार अपने सारे क्षेत्र में व्यवहार में लाना।

ये सेवाएँ समुद्रपारीय राजाओं द्वारा सम्राट के प्रति मैत्री भाव की अभिव्यक्ति थी। सुदूरपूर्व

के हिन्दू उपनिवेश: अप्रत्यक्ष रूप में यहाँ उल्लिखित हुए हैं। (V-24)

इस अभिलेख के आधार पर यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि उसका सीधा ~~नियंत्रण~~ नियन्त्रित साम्राज्य हुगली से यमुना एवं चम्बल तक, पश्चिम में - हिमालय की तराई तक दक्षिण में नर्मदा तक विस्तृत था। दूसरे राज्य इस साम्राज्य से अधीनस्थता के बन्धन से - बंधे थे और दक्षिण के राज्य इस विशाल साम्राज्य की अजेय शक्ति को मानते थे। यह अभिलेख ~~अवश्य~~ तभी उत्कीर्ण कराया होगा जब वह अपनी विजयों के उपरान्त लौटा। ~~कह~~ यह उसके चरित्र एवं व्यक्तित्व के कई पहलुओं की पुष्टि करता है।

साहित्यिक एवं काव्यात्मक दृष्टि से भी यह अभिलेख उतने ही महत्व का है। हरिसेन दावा करते हैं कि प्रशस्ति को काव्य माना जाए। इसे स्पष्ट रूप से काव्य साहित्य का सुन्दर नमूना कहा जा सकता है। सम्भवतः बाण के लिए यह प्रेरणा स्रोत रहा हो। इसमें एक भी अनावश्यक शब्द नहीं है। यह अलंकारों को बहुत स्थान नहीं देता। उसकी प्रशस्ति प्रशंसनीय है। उसकी कवि कल्पना सारी प्रशस्ति को प्रकाशित करती है। इसकी भाषा सरल है। वह असाधारण तौर से लम्बे यौगिक शब्दों से परहेज करता है। परन्तु गद्य अंश में यौगिक शब्दों का प्रयोग किया है। कीथ का मत है कि इसका चतुर्थ पद्य विरलतम प्रभावी भारतीय लघु शब्दचित्र

Scanned with CamScanner

का उत्कृष्ट नमूना है।

समुद्रगुप्त निर प्रशंसित सम्राट रहा है। जो धनद, वरुण, इन्द्र, एवं अन्तक से मिलता-जुलता है। और जो अपनी प्रखर सूक्ष्म बुद्धि से देवताओं के गुरु को भी लज्जा देता है। एवं अपने मोहक संगीत से तम्बुरु तथा अन्य को भी पीछे छोड़ देता है। उसकी मुद्राओं पर उसे बाँसुरी बजाते दिखाया गया है।

यह गुप्त काल की विशेषता का अभिलेख है। यह प्राचीन भारत के आने-वाले महान-शासकों की प्रशस्तियों के लिए आदेश उपस्थित करता है। इसमें सम्राट का विजय पराक्रमांक है। इस प्रकार निम्न प्रकार की विजयों का उल्लेख है:-

i. धर्म विजयी → अधीनता मनवाने वाला, दक्षिणापथ विजयी।

ii. असुरविजयी → राज्यों को जीतकर साम्राज्य में मिलानेवाला।

iii. जंगल क्षेत्र → उत्तरी-पूर्वी सीमा, दक्षिण पश्चिम के गणराज्यों को उपनिवेश बनाना।

iv - च्युत राजवंशों को बहाल करना।

v - शकों एवं अन्य से अधीनता की सन्धि मनवाना।

vi - श्रीलंका के राजा से भी अधीनस्थता की सन्धि मनवाना।

हरिषेण ने समुद्रगुप्त के अधीन प्रतिष्ठा के पदों पर काम किया। समुद्रगुप्त अपने दरबार में साहित्यिक शिरोमणियों की परिषद बुलाता था तो सभी रचनाओं की परीक्षा करके काव्यात्मा विरोधी रचनाओं को अलग करने का निर्णय देती थी। वह स्वयं कविताएँ रचता था एवं कविराज कहा जाता था।

Scanned with CamScanner